इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

कृषि विज्ञान केन्द्र, राजनांदगांव

अंक 08

त्रैमासिक पत्रिका, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, 2011

संरक्षक
डॉ. एम. पी. पांण्डे,
कुलपति,
इं.गां.कृ.वि.,रायपुर (छ.ग.)

मार्गदर्शक
डॉ. जे.एस.उरकुरकर
निदेशक विस्तार सेवाएं,
इं.गां.कृ.वि.,रायपुर (छ.ग.)

प्रेरणा श्रोत
डॉ. यू.एस. गौतम
आंचलिक समन्वयक,
जोन–7, जे.एन.के.वि.वि.,
जबलपुर (म.प्र.)

प्रकाशक
डॉ.आर.एस.सेंगर
कार्यक्रम समन्वयक,
कृ.वि.केन्द्र,राजनांदगांव

श्री एम.के.चन्द्राकर
विषय वस्तु वशेषज्ञ,
कृ.वि.केन्द्र,राजनांदगांव

श्री शिवाजी लिमजे
विषय वस्तु वशेषज्ञ,
कृ.वि.केन्द्र,राजनांदगांव

संपादक
डॉ.एस.के.भाण्डेकर
विषय वस्तु वशेषज्ञ,
कृ.वि.केन्द्र,राजनांदगांव

सह संपादक
श्री एच.एस.तोमर
प्रक्षेत्र प्रबंधक (सस्य)
कृ.वि.केन्द्र,राजनांदगांव

श्री अतुल पचौरी
अनुसंधान सहयोगी

कृषक सम्मान समारोह – दिनांक 04.06.2011 के इं.गां.कृ.वि. रायपुर के सभागाह में जिले के दो नवोन्वेषी कृषक श्री अशोक चौधरी एवं श्रीमति खोरबाहरिन बाई साहू को कृषक समृद्धि एवं निदेशक विस्तार सेवाएं के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित समारोह में सम्मानित किया गया।

धान फसल में समन्वित कीट प्रबंधन :

समन्वित कीट प्रबंधन :

➡ **प्रकाश प्रपंच का प्रयोग**– रोपाई या बियासी के 1 सप्ताह के बाद प्रकाश प्रपंच का उपयोग शुरू कर देना चाहिए। इस प्रपंच को शाम 7 बजे से रात्रि 9.30 बजे तक जलाकर कीटों की निगरानी करें। जिससे कीटों के नाश के लिए उचित प्रबंध कर सकते हैं साथ ही इसमें एकत्रित वयस्क को नष्ट कर दें।

➡ **फेरोमोन ट्रेप का प्रयोग**– फेरोमोन ट्रेप को खेत में तना छेदक के पतंगों की उपस्थिति का पता करने के लिए 5–6 ट्रेप(फंदे) प्रति हेक्टेयर की दर से तथा अधिक संख्या में पकड़ने के लिए 15–20 ट्रेप (फंदे) प्रति हेक्टेयर की दर से लगाए। खेत में लगाने के बाद 3 से 4 सप्ताह तक कार्य करता है। अच्छे परिणामों के लिए 15 से 20 दिन में नये सिरफो ल्योर लगा देना चाहिए।

➡ **ट्राइकोकार्ड का प्रयोग**– तना छेदक का अंड समूह दिखने पर ट्राइकोग्रामा से युक्त 50,000 अंडो की कार्ड (ट्राइकोकार्ड) के छोटे–छोटे टुकड़े करके बांस की खूंटियों में बांधकर खेत में लगायें। ट्राइकोग्रेमा युक्त अंडों को कम से कम दो बार एक सप्ताह के अन्दर से उपयोग करें।

➡ **धान के शत्रु एवं मित्र कीट के अनुपात का ज्ञान**– धान की फसल में विभिन्न प्रकार के मित्र कीट रहते है जिसका ज्ञान किसान भाइयों को होना चाहिए ताकि वो इनका संरक्षण कर सके तथा हानिकारक कीटों एवं लाभदायक जीवों का अनुपात 1:1 है तो किसी भी प्रकार के रासायनिक दवाओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए तथा 2:1 होने पर सतर्क हो जायें एवं यदि अनुपात इससे अधिक होने पर आई. पी. एम. के तहत तुरंत रसायनों का प्रयोग कीटों की संख्या को कम करने के लिए किया जाना चाहिए।

धान के प्रमुख शत्रु कीट

धान के प्रमुख मित्र कीट

➡ **आर्थिक दहलीज के स्तर का ज्ञान** – शत्रु कीटों की पहचान कर इसकी आर्थिक दहलीज के स्तर का आकलन कर लें । यह शत्रु कीटों की वह संख्या है, जिनको पार करने पर आर्थिक क्षति संभावित होती है। यदि शत्रु कीट की संख्या इस स्तर से पार कर ले तो सुरक्षित रसायनों का प्रयोग उनकी संख्या कम करने के लिए किया जाना आवश्यक होता है।

➡ रासायनिक नियंत्रण –

कीट का नाम	रासायनिक नियंत्रण
गंगई तथा तना छेदक	रोपा लगाने के पूर्व धान के थरहा की जड़ों को क्लोरपायरीफॉस 20 ई. सी. दवा का 1 मिली प्रति लीटर पानी तथा 2 किलोग्राम यूरिया मिलाकर 3–4 घंटे डुबोकर रोपा लगाये।अवर्षा की स्थिति में ट्राइजोफॉस 40 ई.सी. (875 मि.ली.) या कार्टप हाइड्रोक्लोराइड 50 डब्ल्यू.पी. दवा का पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। खेत में पानी उपलब्ध रहने पर कार्बोफ्यूरान 3जी (33कि.ग्रा.) या कार्टप हाइड्रोक्लोराइड 4 जी (25 कि.ग्रा.) दानेदार दवाएं उपयोग करते समय खेत में पानी का स्तर 6–7 से.मी. से अधिक न हो एवं दवा डालने के बाद कम से कम 5 दिन तक पानी रोककर रखे। बारिश के समय दानेदार कीटनाशक का छिड़काव नहीं करना चाहिए।
सफेद एवं भूरा माहो	इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल (100 मि.ली.) प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। खेत में पानी उपलब्ध रहने पर कार्बोफ्यूरान 3जी (33 कि.ग्रा.)या कर्टाप हाइड्रोक्लोराइड 4जी (25 कि.ग्रा.) प्रति हेक्टेयर की दर से दानेदार दवा प्रयोग करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए सायपरमेंथ्रिन कीटनाशक का उपयोग कदापि न करें, ऐसा करने से कीड़े की संख्या बढ़ती है।
चितरी,बंकी एवं हिस्पा	धान की फसल पर रस्सी घुमाएं जिससे इल्लियां पानी में गिर जाय। क्वीनालफॉस 25 ई.सी. (2 लीटर), या क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. (2.5 लीटर) प्रति हेक्टेयर की दर से किसी एक का छिड़काव करें।
टिड्डा	अगस्त माह में आक्रमण की शुरूआत में इन्हें हस्त जाल से पकड़कर नष्ट किया जा सकता है तथा मेड़ों में मिथाईल पैराथियान 2 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम/हे.की दर से भुरकाव करें।
जड़ वीविल	कार्बोफ्यूरान 3जी (33 कि.ग्रा.) प्रति हेक्टेयर उपयोग करें।
कटुआ	मैलाथियान 50 ईसी. (500 मिली.) व डाइक्लोरोवास 76 ई.सी. (45मिली.) मिलाकर प्रति हेक्टेयर उपयोग करें।
गंधी बग	कार्बारिल 5 प्रतिशत चूर्ण (30 कि.ग्रा.) या कार्बारिल 50 डब्ल्यु.पी.(1500ग्राम) प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें।

विस्तार गतिविधियाः-

अप्रेल से जून माह की गतिविधियां -

क्र.	विषय	संख्या	अवधि (दिन)	प्रशिक्षार्थी
01	पशुपालन	01	01	50
02	पौध संरक्षण	02	01	52
03	कृषि विस्तार	05	01	155
04	खेत दिवस	02	01	52
05	अंतः सेवा प्रशिक्षण	01	01	24

➡ **ग्राम सूराज** – छत्तीसगढ़ शासन द्वारा दो चरणों में आयोजित ग्राम सुराज अभियान के अंतर्गत (दिनांक 19.04.2011 से 23.04.2011 एवं 25.04.2011 से 29.04.2011) किसान सम्मेलन में केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा जिले के समस्त विकासखण्ड के मुख्य केंद्रों में कृषि एवं पशु पालन संबंधित तकनीकी विषयों पर कृषकों को जानकारी प्रदान की गयी।

अगामी तीन माह (जुलाई-सितंबर) के कार्यक्रम:-

प्रक्षेत्रीय अनुसंधान परीक्षण

फसल	शीर्षक	तकनीक प्रयोग	लाभान्वित कृषक
धान	धान की मेडागास्कर पद्वति का मूल्यांकन।	श्री विधि	04
धान	धान में भूरा माहो कीट के प्रबंधन का आकलन।	समन्वित कीट प्रबंधन	04
कुटकी	कुटकी धान्य फसल किस्म (जे.के.08) का आर्थिक मूल्यांकन।	जे.के.08	04
अरहर	अरहर में कीटव्याधि प्रबंधन का आर्थिक मूल्यांकन।	समन्वित कीट प्रबंधन	04
मुर्गी	राजनांदगांव जिले की जलवायु में वनराजा नस्ल की मुर्गियों की अनुकूलता का आकलन।	वनराजा	04
एजोला	दुग्ध उत्पादन में एजोला चारा का मूल्यांकन।	चारा	04
मशरूम	आयस्टर मशरूम किस्म का आर्थिक मूल्यांकन।	आयस्टर मशरूम	04

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (खरीफ)

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित

क्र.	फसल	प्रदर्शन संख्या	क्षेत्रफल (एकड़ में)
01	मूंग	12	12
02	सोयाबीन	12	12
03	धान	05	05

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (अन्य)

क्र.	प्रोजेक्ट का नाम	फसल/किस्म	प्रदर्शन संख्या	क्षेत्रफल (एकड़ में)
01	आल इंडिया कोआरडिनेटेड रिसर्च प्रोजेक्ट ऑन सोयाबीन,इं.गां.कृ.वि.रायपुर	सोयाबीन (जे.एस.93–05)	10	10
02	ए.आई.सी.एस.एम.आई.पी., शहीद गंडाधूर कृषि महाविद्यालय एवं अनु. केंद्र,जगदलपुर, इं.गां.कृ.वि.रायपुर	कोदो (जे.के.48)	04	04
		कुटकी(जे.के.08)	06	06

प्रक्षेत्र कार्ययोजना -

फसलोत्पादन कार्यक्रम खरीफ 2011–12

क्र.	फसल	किस्म	क्षेत्रफल (एकड़ में)
01	धान	एम.टी.यू.1010	05
		पी.के.व्ही.–एच.एम.टी	05
		महामाया	05
	कैफेटेरिया(धान)	12	0.5
02	अरहर	आशा	02
	कैफेटेरिया(मूंग,सोयाबीन)		0.5
			18

सामयिक सलाह

क्या करें - कब करें - क्यों करें - कैसे करें

जुलाई:

कृषि -

- धान की रोपाई जुलाई माह के अंत तक समाप्त कर लें।
- धान की नर्सरी वाले खेत में रोपाई के सात दिन पूर्व कार्बोपयूरॉन 3 जी का 10 ग्राम प्रति वर्ग मीटर की दर से उपयोग करने से तना छेदक कीट का प्रकोप कम होता है।
- धान में खरपतवार (सांवा, चुहका, नरजेवा, चुनचुनिया, मिर्चीबन) के नियंत्रण के लिए आक्साइयरजिल 80 डब्ल्यू. पी. का 35 ग्राम प्रति एकड़ रोपा के 0 से तीन दिन के बीच छिड़काव करें।
- धान में नत्रजन की 20 से 30 प्रतिशत मात्रा बोते समय तथा शेष 30 प्रतिशत मात्रा कंसे आते समय तथा 40 प्रतिशत मात्रा गभोट के 20 दिन पहले डालना चाहिए।
- बियासी के समय खेत 5 से 10 सेमी जल स्तर होना चाहिए।
- सीधे बोये गये धान में बियासी व सघन चलाई करें व नत्रजन की शेष मात्रा डालें।
- दलहन फसलों के बीज बोने के पूर्व 2.5 ग्राम थीरम प्रति किलोग्राम बीज से उपचारित करें। साथ ही सभी दलहनी फसलों के बीज राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।
- मक्का व सोयाबीन में बोवाई के 20–30 दिनों के अंदर निंदाई करें तथा मक्के में मंजरी निकलने से पहले नत्रजन खाद डालें।
- चारा फसलों में संकर नेपियर, पैरा घास, ज्वार, सूडान घास आदि को ऊंची जमीन में लगावें।

पशुपालन -

- पशुओं को गड्ढे का पानी न पीने दें।
- बरसात शुरू होते ही विषैले जन्तुओं का प्रकोप शुरू हो जाता है अतः उनसे सावधान रहें। पशुओं को भी बचायें।
- पशुओं में रिंडरपेस्ट बीमार के रोधक टीके लगवायें।

उद्यानिकी -

- फल बाग में जल निकास की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- फल वृक्षों में खाद एवं उर्वरक देने का कार्य पूरा करें।
- नये फल पौधों को इस माह लगाना आरम्भ करें। पौध लगाने के बाद आस–पास की मिट्टी को पैर से भलीभांति दबा दें।
- केले के पौधों की रोपाई का कार्य आरम्भ करें।
- पुराने केले के पौधों में बगल से निकलने वाले सकर्स को निकालकर अलग करें।
- नर्सरी में बडिंग, ग्राफ्टिंग का कार्य करें।
- सब्जियों में लम्बे बैंगन की रोपाई करें।

अगस्त :

कृषि -

- धान की रोपाई 10 अगस्त तक बियासी व चलायी 15 अगस्त तक पूर्ण करें।
- धान की बोआई के 21 से 35 दिन के बीच सकरे एवं चौड़े पत्ती वाले खरपतवार के नियंत्रण के लिये व्हीप सुपर 250 मि.ली. + आलमिक्स 8 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- करगा प्रभावित धान के खेतों से करगा छटाई का काम अवश्य करें। इन क्षेत्रों में बैंगनी रंग वाली धान की किस्म (श्यामला) की बोनी करना चाहिये।
- नील हरित काई उपचार वाले खेतों में 3 से 4 से.मी. पानी का स्तर रखें। धान में कीट नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफास 36 ई.सी. 400 मि.लि. 200 लीटर
- पानी में घोलकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- मक्का में नरमंजरी निकलते समय 10–15 कि.ग्रा. नत्रजन प्रति एकड़ की दर से डालें।
- दलहनी एवं तिलहनी फसलों में 30–35 दिन के अंदर निंदाई–गुड़ाई करें।
- बहु–वर्षीय संकर घास आदि तथा रिजका की देखभाल करते रहें।
- सोयाबीन में खरपतवार जब 2 से 3 चौड़ी पत्ती तथा 2 से 3 इंच की घास रहे तब इमाजेथापिर 10 प्रतिशत एस. एल.का 300 मि.ली. प्रति एकड़ छिड़काव करें।

पशुपालन -

- मेड़ की घास आदि को काट कर पशुओं को खिलाया जा सकता है।
- छोटी उम्र के पशुओं के बच्चों को पेट के कृमि मारने की दवा पिलायें साथ ही पशुओं को जूँ किल्नी मारने की दवा का घोल लगायें।
- गाय यदि गर्मी में आ रही हो तो उसे पशुचिकित्सालय ले जाकर जाँच करयें।
- बरसात में घाव जल्दी बढ़ जाता है। अतः घाव देखते ही दवा लगा दें।
- पशु घर में फिनाइल के घोल का छिड़काव करें।

उद्यानिकी -

- फल पौध रोपण कार्य जो शेष रह गया है उसे पूरा करें।
- पौधों के पास यदि पानी इकट्ठा हो तो उसे निकालने का प्रबंध करें।
- नर्सरी में ग्राफ्टिंग तथा बडिंग का कार्य चालू रखें।
- केले में बगल से निकलने वाले सकर्स को अलग करें तथा नये लगाये गये केले में सिफारिश के अनुसार उर्वरक देवें।
- फल वृक्षों में खाद देने का कार्य यदि अभी भी पूरा नहीं हुआ है तो उसे पूरा करें।
- बैंगन, मिर्च, सब्जियों में 20–25 कि.ग्रा. यूरिया प्रति एकड़ डाले। वर्षा न होने पर हल्की सिंचाई करें। कीड़ों से बचाव हेतु कीट नाशक दवाओं का सिफारिश के अनुसार छिड़काव करें।
- इस माह के अंत में मध्यम कालीन गोभी की रोपाई करें।
- कद्दू वर्गीय सब्जी की फसलों में 10–15 किलो ग्राम यूरिया का प्रयोग प्रति एकड़ करें तथा बीटल कीट से बचाव हेतु कार्बोरिल धूल 1.5 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर भुरकाव करें।

सितम्बर :

कृषि -

- धान की फसल में कंसे फूटने व दुग्धावस्था में 5–7 सेमी पानी खेत में अवश्य रखें। बाली निकलने से पूर्व 12 किलोग्राम नत्रजन प्रति एकड़ रोपाई वाले क्षेत्र में डालें।
- धान में फफूंदी जनित झुलसा व शीथ गलन व भूरा धब्बा रोग नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम 12+मेन्कोजेब 63 प्रतिशत(साफ या केयर) की 1.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करें।
- यदि फुदका कीट का प्रकोप दिखे तो मोनोक्रोटोपॉस 36 ई.सी. का 400 मि.ली. प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।
- सोयाबीन फसल में सेमीलूपर एवं गर्डल बीटिल के नियंत्रण हेतु ट्राईजोफॉस 2 मि.ली. अथवा क्लोरोपायरीफॉस 3 मि.ली. दवा प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
- मक्के की संकर किस्मों में 10 से 15 किलोग्राम नत्रजन मंजरी बनते समय डालें।
- माह के अंत में चना व तोरिया की बोवाई करें।
- दलहन एवं तिलहन फसलों में उचित जल निकास की व्यवस्था रखें।
- उड़द व मूंग में पीला मोजेक रोग की रोकथाम हेतु डायमेथोएट 30 ई.सी. 250 मि.ली. या मेटासिस्टाक्स 300 मि.ली. प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें।

पशुपालन -

- यदि गाय भैंस बच्चा दे तो उनके नवजात बच्चों को 2 घंटे के अन्दर पीयूश पिला दें, तथा नाभि पर बीटाडिन का घोल एक सप्ताह तक लगाते रहें।
- संकर नस्ल के बच्चों का सींग रोधन जन्म के 7–15 दिन का होने पर करा लें तथा घाव पर मक्खियाँ न लगनें दें।
- नवजात, बच्चों के रहने की जगह पर नमक या खनिज लवण (मिनरल
- मिक्चर) की ईट रखें।
- पशुओं में मुहपका–खुरपका बीमारी के रोधक टीके लगवायें।
- भैंसों ब्याने का समय होने के पर उनका विशेष ध्यान रखें।

उद्यानिकी -

- पपीते के पौधे की रोपाई का कार्य पूरा करें।
- बगीचे में सिंचाई नाली का निर्माण करें तथा खरपतवार नियंत्रण हेतु निंदाई–गुड़ाई करें।
- संतरा एवं बेर में सूंडी कीट नियंत्रण हेतु कीटनाशक दवा मोनोक्रोटोफोस या मेलाथियान का छिड़काव करें।
- अदरक एवं हल्दी में सिंचाई करें।
- अगस्त महीने में डाली गयी नर्सरी की रोपाई करें। पिछेती किस्म की नर्सरी तैयार करें।
- महीने के अंत में अगेती आलू (कुफरी चन्द्रमुखी) की बुवाई की तैयारी करें।
- गोभी की अगेती फसल में गुडाई तथा निंदाई करें और 20 किलोग्राम यूरिया प्रति एकड डालकर गुड़ाई करें।
- मटर व मूली की अगेती किस्मों की बुवाई महीने के अंत तक पूरी करें।

सेवा में,

श्रीमान / डॉ. ____________________

____

____

बुक पोस्ट

प्रेषक : कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, राजनांदगांव (छ.ग.)

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें :

कार्यक्रम समन्वयक,
कृषि विज्ञान केन्द्र, राजनांदगांव (छ.ग.)
फोन नं. : 07744 - 291525
E-mail : kvk.rjn@rediffmail.com